वनों की गुणवत्ता सुधार, उत्पादकता वृद्धि एवं वनाधारित समुदायों की आजीविका सुधार हेतु पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

भारत में वनों में तथा वनों के आस–पास रहने वाले आदिवासी व अन्य ग्रामीणों के दैनिक जीवन में वनों का महत्वपूर्ण स्थान हैं। भारत की लगभग 30 करोड़ जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वनों पर आजीविका के लिए निर्भर हैं। जिसमें से अधिकतर गरीब किसान हैं तथा उनके पास जीविकोपार्जन हेतु सीमित विकल्प हैं। स्थानीय समुदायों की वनों पर इतनी अधिक निर्भरता के साथ–साथ भारत में प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र विश्व से काफी कम हैं। देश के प्राकृतिक संसाधनों पर अत्याधिक दोहन व दबाव के कारण देश में भूक्षरण तथा मरूस्थलीकरण भी बढ़ रहा है, भारत के लगभग 41 प्रतिशत वन क्षेत्र में किसी न किसी रूप में क्षरण हो रहा हैं।

विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित पारितन्त्र सेवाएं सुधार परियोजना (ई.एस.आई.पी) का कार्यन्वयन मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के चयनित भू–भागों पर किया जा रहा है। इसमें वनों की पारितंत्र सेवाओं का सुधार करना, निजी तथा सामुदायिक भूमि में सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों को वृहत स्तर पर बढ़ावा देना है।

परियोजना के लाभार्थी

लगभग 5,000 ग्रामीण जिनकी आजीविका वनों पर आधारित हैं विशेष रूप से जैसे छोटे किसान, भूमिहीन तथा मवेशीपालक इसके मुख्य लाभार्थी हैं। इस परियोजना के अंतर्गत वनों की गुणवत्ता में सुधार, भू–प्रबंधन, जलवायु संबंधित सुधार, एवं भूमि की उर्वरकता शक्ति में वृद्धि के प्रयास करना है।

परियोजना का उद्देश्य: मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य के चिन्हित भू–भागों में वनों की गुणवत्ता में सुधार, सतत् भू–प्रबंधन एवं लघु वनोपज प्रबंधन से वनों पर आश्रित स्थानीय समुदायों को होने वाले लाभों का प्रदर्शन करना है।

परियोजना के सुचारू रूप से क्रियान्वयन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य वन विभाग तथा मध्य प्रदेश राज्य वन विभाग एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् देहरादून क्रियान्वयन इकाइयों के रूप में कार्य कर रहे हैं। भारत सरकार का पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय इस कार्यक्रम की प्रबंधन इकाई के रूप में कार्य कर रहा है।

हरित भारत मिशन एवं पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना

हरित भारत मिशन का लक्ष्य जलवायु परिवर्तन अनुकूलन, न्यूनीकरण के साथ–साथ परितंत्र सेवाओं जैसे कार्बन पृथक्करण तथा भण्डारण, जलीय सेवायें तथा जैव विविधता के साथ–साथ अन्य सेवाये जैसे ईंधन, चारा, छोटे प्रकाष्ठ व गैर प्रकाष्ठ वनोपज में वृद्धि करना हैं। विश्व बैंक की सहायता से भारत में पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के चुनिन्दा भू–भागों में वनों की गुणवत्ता सुधार, भू–प्रबंधन तथा गैर प्रकाष्ठ वनोपज में सुधार हेतु चलायी जा रही है। यह परियोजना इन राज्यों में हरित भारत मिशन के क्रियान्वयन को रणनीतिक रूप से सहायता कर रही हैं।

परियोजना के प्रमुख घटक

पारितंत्र सुधार परियोजना (ई.एस.आई.पी) के निम्न तीन मुख्य घटक हैं :

घटक 1 : मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में वानिकी और भूमि प्रबंधन कार्यक्रमों में सरकारी संस्थानों की क्षमताओं को मजबूत करना।

- इसके अंतर्गत राज्य वन विभागों, वन विकास एजेंसियों और स्थानीय समुदायों की वन और भूमि संसाधनों के प्रबंधन में सुधार, लघु वनोपज क्षमता विकास और इन संसाधनों पर निर्भर रहने वाले स्थानीय समुदायों को स्थायी लाभ प्रदान करने के लिए क्षमता और कौशल वृद्धि का लक्ष्य हैं।
- इस घटक के अंतर्गत भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, परियोजना राज्यों मे कार्बन मापन एवं अनुश्रवण प्रणाली के विकास हेतु तकनीकी सहयोग प्रदान कर रही है। मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के परियोजना के अंतर्गत आने वाले वन क्षेत्रों का वन कार्बन भण्डारण का आंकलन करना तथा वन कर्मियों का वन कार्बन भण्डार मापन हेतु क्षमता विकास भी करना है।

घटक 2 : वनों की गुणवत्ता एवं उत्पादकता में सुधार

- इसके अंतर्गत वन क्षेत्रों में कार्बन भंडारण को बढ़ाना एवं पुनः स्थापित करना, तथा
- अकाष्ठ वन उपज के संवहनीय उपयोजन के लिए सुदाय आधारित माडलों को विकसित करना हैं।

घटक 3 : चयनित भू–परिदृश्यों में सतत् भूमि तथा पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों को समानुपातिक रूप से बढ़ाना

परियोजना के इस घटक को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा हैं। इस घटक के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं :

- भूमि क्षरण और मरुस्थलीकरण को रोकने के प्रयास।
- सामाजिक–आर्थिक स्थिति की आधारभूत रिपोर्ट तैयार करना।
- सतत् भूमि तथा पारितंत्र प्रबंधन के सर्वोत्तम प्रणालियों को लागू करना और उचित मापदण्ड स्थापित करना।
- भूमि क्षरण और मरुस्थलीकरण निगरानी के लिए राष्ट्रीय क्षमता विकसित करना।
- संबंधित संकेतकों को ट्रैक करना और सतत् भूमि तथा पारितंत्र प्रबंधन दृष्टिकोणों पर ज्ञान विनिमय करना।
- सतत् भूमि तथा पारितंत्र प्रबंधन ज्ञान नेटवर्क को विकसित और कार्यान्वित करना।

पारितन्त्र सेवाएं सुधार परियोजना (ई.एस.आई.पी.) के अन्तर्गत मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के चयनित भू–भागों/भू–परिदृश्यों में सतत् भूमि तथा पारितंत्र प्रबंधन (SLEM) को समानुपातिक रूप से बढ़ाने हेतु भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की प्रणालियों को बढ़ावा देता है।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ईएसआईपी परियोजना के अन्तर्गत प्रमुख रूप से निम्न गतिविधियों का क्रियान्वयन कर रही हैं :

- सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों को जैसे कि जल प्रबंधन भागीदारी, मिट्टी की उर्वरता और भूमि उत्पादकता में सुधार आदि को वृहत स्तर पर अपनाना।
- सामुदायिक संपत्ति संसाधनों में सुधार के लिए छोटे कामों का वित्तपोषण (चेक डैम/नाली के प्लग/मिट्टी–नमी संरक्षण कार्य/जल निकासी लाइन में सुधार, और निर्माण)
- विभिन्न हितधारकों को सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों के उपयोग पर जागरूकता एवं प्रशिक्षण।
- प्रशिक्षण मैनुअल, प्रचार सामग्री, ज्ञान उत्पाद, सफलता की कहानियां और शोध पत्र तैयार करना।
- चुने गए सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों को लागू करने के लिए विभिन्न हितधारकों (लाभार्थियों और विस्तार कार्यकर्ताओं) को प्रशिक्षण देना।
- हितधारक जागरूकताएं क्षमता निर्माण और तकनीकी जानकारी (उन्नत बीज/पौधे/तकनीक), मूल्यवर्धन और बाजार संपर्क जैसे कृषि संस्थानों, राज्य कृषि विभागों और सामुदायिक संस्थाओं आदि के साथ कृषि वानिकी आधारित गतिविधियों के लिए समर्थन।
- प्रशिक्षण के माध्यम से सामान्य संपत्ति संसाधनों की बहाली को बढ़ावा देने के लिए वन विज्ञान केंद्र और नर्सरी हेतु क्षमता निर्माण, कार्यशालाओं को संवेदनशील बनाने और नई विस्तार सामग्री की स्थापना आदि।
- मौजूदा वन विज्ञान केन्द्रों को मजबूत करने के लिए अध्ययन एवं स्थानीय समुदाय को तकनीकी सहायता, क्षमता निर्माण और अन्य वनीकरण कार्यक्रमों के साथ संबंध स्थापित करना।
- सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन दृष्टिकोण को अपनाने और विस्तार करने में हितधारकों के समुदाय का विकास।
- संगठन और समुदाय, खेत और सामान्य भूमि के इंटरफ़ेस पर सीखने की घटनाओं का कार्यान्वयन।
- सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन प्रेक्टिशनर और भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन उपयोगकर्ताओं के समुदाय का डेटाबेस विकसित करना।
- सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन ज्ञान उत्पादों की तैयारी और प्रसार के लिए तकनीकी सहायता।

परियोजना के सुचारू क्रियान्वयन से मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के 25,000 हे0 क्षेत्रफल मे निजी एवं साझी सम्पत्ति संसाधनों की उत्पादकता में वृद्धि का लक्ष्य है, जिसमे चारा तथा जलाऊ ईंधन उत्पादन में वृद्धि, सहयोगी सूक्ष्म जल प्रबंध (भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन) की सर्वोत्तम प्रथाओं के क्रियान्वयन हेतु हितधारकों का क्षमता विकास प्रमुख हैं। परियोजना के उचित क्रियान्वयन से वनों की गुणवत्ता सुधार एवं उत्पादकता में वृद्धि के साथ–साथ वनों पर आधारित स्थानीय समुदायों की अजीविका के बेहतर अवसर उपलब्ध होंगे तथा उचित भू–प्रबंधन जल–प्रबंधन के साथ–साथ मरूस्थलीकरण के फैलाव में भी रोक लगेगी।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् का संक्षिप्त विवरण

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की एक स्वायत्त संस्था है। यह राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान प्रणाली में एक सर्वोच्च संस्था है जो वानिकी क्षेत्र में आवश्यकता अनुसार अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार को बढ़ावा देता है। इसके 9 अनुसंधान संस्थान : शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (जोधपुर), वन अनुसंधान संस्थान (देहरादून), हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (शिमला), वन जैवविविधता संस्थान (हैदराबाद), वन उत्पादकता संस्थान (राँची), वन आनुवंशिकी और वृक्ष प्रजनन संस्थान (कोयम्बटूर), काष्ठ विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (बेंगलुरू), वर्षा वन अनुसंधान संस्थान (जोरहाट) और उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (जबलपुर) है। इसके 5 केंद्र अगरतला, आइजोल, प्रयागराज, छिंदवाड़ा एवं विशाखापट्टनम में स्थित हैं। प्रत्येक संस्थान अपने अधिकार क्षेत्र के तहत राज्यों में वानिकी क्षेत्र में अनुसंधान, विस्तार और शिक्षा का निर्देशन और प्रबंधन करता है।

प्रकाशित :

ई.एस.आई.पी. – परियोजना कार्यान्वयन इकाई
जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन प्रभाग
भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
वेबसाइट : www.icfre.gov.in

कॉपीराइट@ICFRE, 2020

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

परियोजना निदेशक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224831
ई–मेल : projectdirectoresip@gmail.com

परियोजना प्रबंधक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224803, 2750296, 2224823
ई–मेल : rawatrs@icfre.org

Design & Print
Saraswati Press # 7055053333